जनवरी

इस बरस तो ऐसा होता नहीं लग रहा है। पर दिसम्बर के अन्तिम दिनों से जनवरी तक का सफर काँच की-सी पारदर्शी ठण्डी हवा से होकर पूरा हुआ करता है। काँच की - सी पारदर्शी ठण्डी हवा जिसे आप चलते हुए लगभग चाकू की तरह काटते हैं। वह थोड़ी गाढ़ी हो गई होती है या गर्मियों की चंचल फरफराती हवा से बिल्कुल अलग : कुछ-कुछ ठहरी-सी, सोचती-सी हवा।

मैं ऐसी ही हवा पर अपने ठिठुरने के निशान छोड़ता अपने छोटे-छोटे जुड़वा बच्चों से मिलने अपने भाई के घर जाता था। उसका घर पहाड़ पर था। उस पर चढ़ती सड़क जनवरी की ठण्ड में ठिठुरती-सी जान पड़ती। घने पेड़ों पर कोहरा पत्तों के बीच सुस्ताता हुआ महसूस होता। मानो कह रहा हो कि रास्ता भर इन पेड़ों पर बिता लूँ सुबह आगे की यात्रा पर निकलूँगा। जब कभी हल्के-नीले कोहरे से ढँके पेड़ों के बीच की जगह से आसमान को देखता तो लगता कि तारे बहुत पास आ गए हैं। और इतने बड़े लग रहे हैं कि उन्हें हाथ पर लेकर गेंद की तरह खेला जा सकता है या पके अमरूद की तरह खाया जा सकता है।

जनवरी के दिनों की धूप ज़्यादा गाढ़ी हुआ करती है। एक दम खुली धूप, बाँहें फैलाए आपको पास बुलाती धूप। मेरी कहानी की एक पात्र को ऐसी धूप देख कर लगा था कि अगर वह उस पर पाँव मारे तो छप-छप की आवाज़ आएगी। इस गाढ़ी धूप में शेवन्ती के सफेद या पीले या लाल फूल ऐसे हिलते महसूस होते हैं मानो वे -धूप-जल - के भीतर डोल रहे हों, अपनी चमक बिखेरते। इस धूप में गर्माहट न के बराबर होती है। जनवरी में जब आप धूप में कुर्सी डालकर कोई किताब पढ़ रहे होते तो लगता मानो धूप में केवल प्रकाश बाकी है उसकी गर्माहट को कोई परी चुराकर बसन्त के महीनों के पीछे रख आई है।

उदयन वाजपेयी

280 ● जनवरी 2010

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

2 जनवरी
4 एक चील जो चाँद पे अण्डे देती थी...
5 भारत में सबसे पहले चाय पहाड़ों में ही आई?
7 दूध
10 जंगल की वारदात
12 एक था चपड़...
14 कहाँ से आते हैं जूते?
18 घोड़ा कितना दम लगाके दौड़ा?
20 साल
27 घोटल-मोटल के पहाड़े
28 एक मुलाकात चींटी से...
30 घोंसले का शोरबा
34 मेरा पसन्दीदा चित्र
35 लाल साइकिल कहाँ खो गई?
37 फ्लैट नम्बर 4-सी
40 सुन्दर मुन्दरिए हो!

इस अंक में

2

जाती जनवरी के साथ-साथ धीमे-धीमे बिगनोनिया की बेलें नज़र आने लगती हैं। गुलाबी फलॉक्स और नैस्ट्रेशियम का भी यही किस्सा है। सर्दियाँ जहाँ छोटे पक्षियों के उत्साह को कुछ कम कर देती है वहीं चील और बाज़ जैसे बड़े पक्षी इसी समय अपना जोड़ा बनाते दिखते हैं।

4

कि एक जनाब तो अण्डे देने चाँद चले जाते हैं

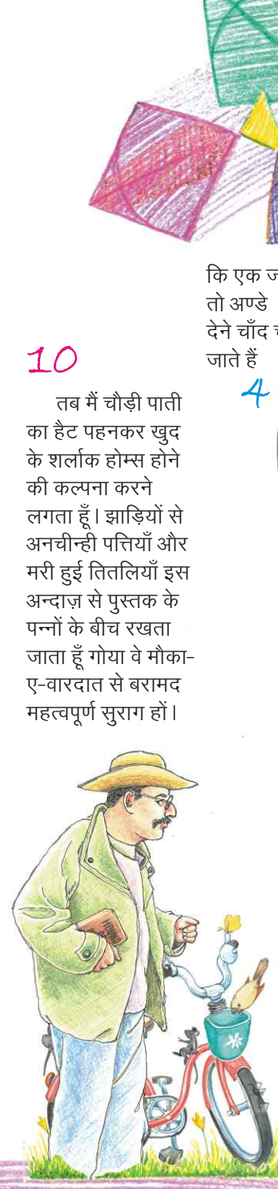

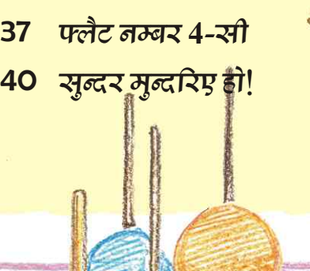

10

तब मैं चौड़ी पाती का हैट पहनकर खुद के शर्लाक होम्स होने की कल्पना करने लगता हूँ। झाड़ियों से अनचीन्ही पत्तियाँ और मरी हुई तितलियाँ इस अन्दाज़ से पुस्तक के पन्नों के बीच रखता जाता हूँ गोया वे मौका-ए-वारदात से बरामद महत्वपूर्ण सुराग हों।

20

बारह महीनों बाद हमेशा
घर पोशाक बदलता है
नम्बर प्लेट- बदल जाती है
साल नया जब लगता है

35

बहुत सारे जंगली चूहे उधर से गुज़रे। वे बहुत सारे थे इसलिए निडर थे। सबके-सब साइकिल पर चढ़कर उछल कूद मचाने लगे।

: आवरण :
सौम्या मेनन

सम्पादन
सुशील शुक्ल
शशि सबलोक

सहायक सम्पादक
कविता तिवारी

सम्पादकीय सलाहकार
रेक्स डी रोज़ारियो
तेजी ग्रोवर

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

डिज़ाइन
दिलीप चिंचालकर

वितरण
विजय झोपटे

सहयोग
मिहिर
कनक
प्रभात
कमलेश यादव

सदस्यता शुल्क

एक प्रतिः	20.00	
वार्षिकः	200.00	(व्यक्तिगत)
	300.00	(संस्थागत)
तीन सालः	500.00	(व्यक्तिगत)
	700.00	(संस्थागत)
आजीवनः	3000.00	(व्यक्तिगत)
	4000.00	(संस्थागत)

एस.आई.जी/आई.सी.आई.सी.आई. बैंक के वित्तीय सहयोग से प्रकाशित

सभी डाक खर्च हम देंगे। चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चैक से भेज सकते हैं। भोपाल के बाहर के चैक में 80.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

एकलव्य
ई-10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर भोपाल, म.प्र. 462 016
फोनः (0755) 2671017, 2550976, 6549033
फैक्सः (0755) 2551108
chakmak@eklavya.in
circulation@eklavya.in
www.eklavya.in